बारीकी के साथ विश्लेषित किया गया है। सत्ता हमेशा से ही खून–खराबा और नैतिक मूल्यों का पतन ही करती आई है। जिसको इसका नशा चढ़ जाता है वह किसी भी हद तक जा सकता है। तब उसको मात्र अपना स्वार्थ ही दिखलाई पड़ता है। रिश्तों की मर्यादा, उसकी विश्वसनीयता और गरिमा समाप्त हो जाती है। कमल कुमार की रचनाओं में स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने और समाज में उसकी स्वीकृति प्रदान करने पर भी बल दिया गया है। आपके रचनाओं के पात्र खासकर जो किसी न किसी रूप में आम आदमी का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत हो रहे हैं, वह अपने अधिकारों और विचारों के प्रति सजग हैं। वह किसी भी तरह के गलत व्यवहार को बर्दाश्त नहीं करते बल्कि उसके खिलाफ आवाज उठाने की क्षमता रखते हैं।

शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य को पूरा करने के लिए जरूरी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है जिसमें विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आलोचना पद्धति एवं समाजशास्त्रीय पद्धति आदि का प्रयोग किया गया है तथा इनके माध्यम से शोध के सभी पहलुओं को जानने, समझने और सभी उद्देश्यों को पूरा करने की भरपूर कोशिश की गयी है। किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए सबसे आधारभूत वस्तु पुस्तकें होती है जिसके लिए पुस्तकालयीन अध्ययन सर्वाधिक सहयोगी और उपयोगी रहा है। साथ ही शोध के अनसुलझे पहलुओं को जानने के लिए कथा–साहित्य के विशेषज्ञों, आलोचकों से आत्मीय वार्तालाप एवं साक्षात्कार भी लिया गया। जिससे कमल कुमार के रचनाओं के विभिन्न पहलुओं को जाना जा सका है। शोध कार्य के अंत में सबसे जरूरी और अहम हिस्सा संदर्भ ग्रंथ का है जिसमें आधारभूत पुस्तकों के साथ जहां–जहां से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग लिया गया है। उन सभी तथ्यों को शोध कार्य की संदर्भ सूची में उल्लिखित किया गया है, जिसमें आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाएँ, कोश ग्रंथ आदि शामिल हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा–साहित्य का अनुशीलन'' है, जिसका गहराई से अध्ययन और विश्लेषण करके उसके उद्देश्यों को पूरा करने की कोशिश की गयी है।

घोषणा

मैं रेखा गुप्ता, एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध "**समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा साहित्य का अनुशीलन**", हिन्दी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत है। जहाँ तक मुझे ज्ञान है कि इस शोध-सामग्री का उपयोग कहीं भी शोध-उपाधि के लिए नहीं किया गया है, न ही यह शोध-शीर्षक अन्यत्र शोधोपाधि का आधार बना है।

DECLARATION

I do hereby declare that the thesis titled **"Samajshashtriya Nikash Per Kamal Kumar Ke Katha Sahitya Ka Anusheelan"** Submitted by me to Tezpur University, Tezpur, Assam in part fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi Department under the school of Humanities and Social Sciences, is my own and that it has not been submitted to any other institution, icluding the university in any other form or published at any time before.

रेखा गुप्ता

शोधार्थी

हिन्दी विभाग

तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

असम-784028

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रेखा गुप्ता, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम ने अपना शोध-प्रबंध "**समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा-साहित्य का अनुशीलन**" मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आंशिक या पूर्णरूप से अन्यत्र शोधोपाधि हेतु नहीं किया गया है।

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"Samajshastriya Nikash Per Kamal Kumar Ke Katha Sashitya Ka Anusheelan"** submitted to the School of Humanities and Social Sciences, Tezpur University, Tezpur in partial fulfillment for the award of the degree of Doctor of Philosophy in Hindi is a record of research work carried out by Rekha Gupta under my supervision and guidance.

All help received by her from various sources have been duly acknowledged. No part of the thesis has been submitted elsewhere for the award of any other degree.

शोध-निर्देशक

डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

घोषणा

मैं रेखा गुप्ता, एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध **''समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा साहित्य का अनुशीलन'',** हिन्दी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है कि इस शोध-सामग्री का उपयोग कहीं भी शोध-उपाधि के लिए नहीं किया गया है, न ही यह शोध-शीर्षक अन्यत्र शोधोपाधि का आधार बना है।

DECLARATION

I do hereby declare that the thesis titled **"Samajshashtriya Nikash Per Kamal Kumar Ke Katha Sahitya Ka Anusheelan"** Submitted by me to Tezpur University, Tezpur, Assam in part fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor Of Philosophy in Hindi Department under the school of Humanities and Social Sciences, is my own and that it has not been submitted to any other institution, icluding the university in any other form or published at any time before.

रेखा गुप्ता
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर
असम-784028

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रेखा गुप्ता, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम ने अपना शोध-प्रबंध "**समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा-साहित्य का अनुशीलन**" मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आंशिक या पूर्णरूप से अन्यत्र शोधोपाधि हेतु नहीं किया गया है।

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis entitled **"Samajshastriya Nikash Per Kamal Kumar Ke Katha Sashitya Ka Anusheelan"** submitted to the School of Humanities and Social Sciences, Tezpur University, Tezpur in partial fulfillment for the award of the degree of Doctor Of Philosophy in Hindi is a record of research work carried out by Rekha Gupta under my supervision and guidance.

All help received by her from various sources have been duly acknowledged. No part of the thesis has been submitted elsewhere for the award of any other degree.

शोध-निर्देशक

डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

आभार

यह बात बिल्कुल सत्य है कि बिना ईश्वर के कृपा के और बिना माता-पिता के आशीर्वाद के इस जगत में कुछ भी कर पाना संभव नहीं प्रतीत होता है। मेरे जीवन में भी यह बात बिल्कुल सत्य सिद्ध हुई है। यदि ईश्वर की कृपा और माता-पिता का आशीर्वाद नही होता तो शायद मैं आज अपने इस शोध ग्रंथ को पूर्ण नहीं कर पाती।

मैं अपने पिताजी को चाहे जितना भी धन्यवाद दे लूं वह बहुत ही अल्प होगा, क्योंकि उन्होंने बचपन से आज तक मुझे आगे और आगे बढ़ते रहने के लिए सदैव प्रेरित किया है। आज मैं जहाँ-कहीं भी हूँ उनके आशीर्वाद के फलस्वरूप ही हूँ। उनका आशीर्वाद सदैव मुझ पर बना रहे यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है। उनके असीम कृपा और आशीर्वाद के बिना मेरा यह शोध ग्रंथ शायद कभी पूर्ण नहीं हो पाता, धन्यवाद पिताजी।

मैं तह-ए-दिल से आभार प्रकट करती हूँ अपने पिता तुल्य शोध-निर्देशक, शोध गुरू प्रो0 सूर्यकान्त त्रिपाठी हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर का जिनके सतत् एवं अथक मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से मैं यह शोध ग्रंथ पूर्ण कर पायी हूँ। अपने परिवार से दूर रहकर भी सर के सानिध्य के कारण कभी भी परिवार की कमी महसूस नहीं हुयी। सर ने हर कदम पर और हर समस्या का समाधान बड़े ही सहज रूप से किया है। सर के अमूल्य सुझाव मेरे शोध-पथ को बहुत ही आसान बनाया करते थे। मेरे पूरे शोध कार्य के दौरान वह मेरे पथ-प्रदर्शक एवं ऊर्जा के स्रोत बने रहे, जिसके परिणामस्वरूप मैं अपना शोध-प्रबंध उचित समय पर पूर्ण कर पायी हूँ।

मैं धन्यवाद ज्ञापन करना चाहूंगी अपने जीवनसाथी श्री सपन कुमार गुप्ता का जिनके बराबर स्नेह एवं साथ ने इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मुझे तनिक भी कठिनाई नहीं महसूस होने दी।

तेजपुर विश्वविद्यालय के उन सभी अग्रज एवं अनुज भाई-बहनों का आभार प्रकट करती हूँ जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग ने मेरा उत्साह बनाए रखा। विशेष रूप से श्री हेमंत कुमार गुप्ता, श्री पंचराज यादव एवं सुश्री अर्पणा का जिन्होंने मेरे अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थिति में सदैव

मेरा साथ दिया। मैं तेजपुर विश्वविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों का धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मिलता रहा।

मेरे शोध कार्य को सरल एवं सहज बनाने के लिए मैं देश के उन सभी प्रतिष्ठित पुस्तकालयों, केन्द्रीय पुस्तकालयों, तेजपुर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, शोध कार्य से सम्बन्धित समस्त पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, इन्टरनेट, शोधगंगा सभी का धन्यवाद करती हूँ इनके बराबर सहयोग के कारण मेरा शोध ग्रंथ उचित समय पर सम्पन्न हो सका है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) को विशेष रूप से धन्यवाद देती हूँ जिनके द्वारा प्रदान किये गये फेलोशिप से मैंने अपने शोध ग्रंथ को निरंतर अग्रसर बनाए रखा।

अन्त में मैं उन समस्त परिवारजनों, भाई-बहनों, सगे-सम्बन्धियों एवं उन समस्त स्नेहीजनों का आभार प्रकट करती हूँ जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग एवं प्रेम से आज मैं अपने इस शोध कार्य को सम्पन्न कर पायी हूँ।

रेखा गुप्ता
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर
(असम)